

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपद उवाच ॥ १ ॥

१७१७१७ गुनुमंशु पीवा (गन्धर्वीने) वात्मा वज्र सत्त्व गताधिय विश्वकत्मा येन मन्दुत ॥
(नकाद्रुतु स्रवाश्रुतु शुद्धा वाग याग, गुनुमिक यत्रि कामाद्रुतु विनिहानि तन्मात्रं
निक सत्त्व सत्त्वा सन सत्त्वो रययद, अरय विस्मयं वाय, मरुतु यथा गुरु, कृया वृक वृद
व, लकुका विद ॥ मयूव वाक्, वाक् वचन सत्त्व, शरीर, समस्त लोक, सर्व सत्त्व वृत्त
वत्, सर्व सत्त्व याक यूपथं, दानादि सिद्धि मानिर्ह्य दाने अदि न विद्य न साद्विध, आगच्छ
नादि तत्त्व न ॥ आग सत्त्व नादि न, सत्त्व वादि, सत्त्व दुःखाक, अहि साव, त्यागु त्याग मयव, क
नुम्भ, कनुम्भ वाक्, हीत च तसा, अदि तत्त्व, वत न्य, समता समस्त न, विरु मडाडा
उचिरु उचिरा न याक, सत्त्वाना नाथ रगके, सत्त्व दकन, वाजा नश्य, सत्त्वा

संतदकवं, विस्यमह, विस्यममदयकु, अनाथनयवाधवा, नाजावंमदू, वाधवडंमइ, अ
 रिवाकार्थनतहं, अरिधंकर्यागसमरुंशिव, ततहं४ सुटवाका गुलादधि, ववनदक
 कक॥

ॐ	वैश्वानर	नीलवज्र	वज्राकिनवर्त	वज्र	दिनपद्म	विष्णुवर्ज
ॐ	वैश्वानर	सखवज्री	नलवज्री	धर्मवज्री		कर्मवज्री
यं	सुखिकनीवर्ज	उक्तवर्ज	वज्राकितांकु	गनवाप	स वज्राकुजवयं	
ॐ	अक्राय	वज्रसख	वज्रनाज	वज्रासाधु	वज्रासाधु	
				गोम		

वज्रावर्ज नलमासा वीणा, शिष्टविक वज्राकिन कर्मवयं
 ॐ लाक्षा, माला, गीता, नृणा धूपा, पूजा, दीपा, गन्धी
 वज्राकिनवर्त, वज्राकिनवर्तमासा, सुख्य, विकामलिधुज दीपपत्ति
 दे मलसंख वज्रनल वज्रागज, वज्राकशु वज्राहास

प. वज्राकिनवर्त
 ॐ वज्राकिन पाणि नाव वयं
 वज्राकिन वज्रापाणि वज्रासुट वज्रावर्ज
 वज्राकिन वज्राधर्म स्वमपूरको, अक्षमचक्र गीरव
 सनात्रपद्म वज्राहृ वज्राहृ वज्रासाध

धर्मलिपादस्त्रायन दानसंस्तन ॥ जह्यायमाविधिपूर्वपादस्त्रायनायासकुलिचाध्यायगु ॥ चा
 ग्वना १४ द्वापातचिनागुभया १४ तसिजघन १४ नूयाकापन उहयाकापय पदुन नील पृष्य
 नाग पद्मनाग विहिर्पचमल नूपन उहयय १४ धनसिजघन सगय जह्यातमून धनग्व
 पमंदन २ गुयातग्व २ भ्रातन १ गुयात १ ग्व धूलिव्याकैनिक नूयासिजघन ग्यापूजायायमा
 मूलन जग्यज्ज्रातन कर्मन यदसाधन मंथुल उपाध्यान देवतायामंथुल पादस्त्रायनाया
 पूजायाय उपाध्या कर्मचानयागुन मंथुल यायमा ॥ कर्मियाहायूजायाना चाभयासिजघन लव
 हाय जग्यज्ज्रातन कर्म जग्यदूक व्याकू ३ पंकला जग्यतमिसगक १ गुमिवाय जाकू २ जग्यद

न धर्म कल्याणय धनय त्रिमानं जग्यदनक ॥ मूलपदसाधनयामंथुल चाकपूर्वज पञ्चिमहा
 नाकू १ ॥ जाकू १ देवतामंथुल चाकलाकू १ ज्ञानैकू १ रुसगुभ्रातमं पंकला मूलाचार्यमाताहा
 नि कल्याणयमाल जग्यज्ज्रातन धनय त्रिमानं दयज्ञल पूजायाना बलिविय विधि धर्मज्ञानया
 य ॥ ॥ कायस्त्राय दानसंस्तन धर्मगुयायं जिउ ॥ व्यलान मलासा कलसगं धलिमत यंचगः
 पागु दान कायसिस्त्रायनायाना पूजायाय कर्मियाहायूजायाना दानलजहाय सालमियाह
 हायूजायाना कायलजहाय बलदयकैकू १६ इकू १२ व्या अथवाकू १२ इकू १२ व्या धर्मपु
 मानगयगु दान ४० सानजाने ० यकालान सगयमाल जिलसामंथुलाकान धवलग्वयमाल इ
 ल ॥ ॥ निपादस्त्रायना दान बलदयकै विधिः ॥ ॥ धनलियचिकायज्ञल ॥ ॥

धर्मेतिमानिचीपुतापस्वाय कलससर्धं मरुपंचगव्य पाणु वासिवलिमानिचीपुतापकीकमव
 र्णकूपुतिसनागुयुक् २ उक्तीषविजयागुयुक् २ धसागुनिसंधडा २ गुजगुहगुयुक् २ सवायातयमा
 ल॥ यिनयादिगपुताप १५ विचिगुपुताप टचगुमाहनाजदिपाल ट धर्मेधकपाविधिधयुजा
 उपाध्वानपुतापपूजायानाहापूजामानाकर्तियागलडाहाय पुतापवायक वासिवलिविधय ध
 कालि ५ कस्यैभयनद्यायहायकमान पाथयायमान दकनासमयाचकुवलिह्याय धननमाल
 पूर्वसउस्त्रिषविजया दथसमात्रिची पश्चिमस पुतिसना धर्मेवायक ॥ ॥ ॐ तिमानिचीपुता
 पविधि ॥ ॥ धर्मेतिपिथकाउनवायदयकाउनमाल ॥ सर्गधेमत धर्मेपागुमहनिद्रुयगु
 कलव १ सगया धकपापूजायाय क १ यागुर्मधुलसमाधिदनमा मध्यमर्निर्मेपूजा

पूजाधर्मीकीसलिन ५

सचचाहालमा र्पंचगालपर्यमा पूजाधूनडासर्धं ह्याय महनीह्याय धनयर्णिधधं धन
 पर्णि किसलि १ हसलित्वनापूजायायमा धकिसलिहाकमजिउ महनि मतसिकमजिउ धन
 पर्णि यिनाह्यप्रसायमान ट गुपिथं सिद्धयडा कायामूलयानागुपिथसं तुडानापूजायानासर्ग
 धेह्याय विप्रबादकसमयाचकु पिथकायाह्यागुयर्चिदडाया धनसगयापंचायचानपूजायाय
 हाऊनयाय मूलपिथचडलपूनिर्मे ट पिथं धिकमजिउरुलगुह ॥ ॥ ॐ तिमात्रिकोप्रावाह
 नविधि ॥ ॥ अथपदसाधनमाह ॥ पदसाधनयासहू निवाध्याय ॥ सतिषूहपूल् कविसन
 नयालयसिउमजालपूजायायमान ॥ ॥ मगुनवीय मूलमगुलसपिदिमयामंदल ॥ ॥ म
 गुलिगुह देवताहून उ देवतायामहल चोयजुलो ॥ ॥ इहाधूयाक ॥ ॥ हापसूर्यगुवि

किंकिं

उक्तदेवतागुहउक्तवीय

^स
 नि कथा इति चाना कलपूरा चाना मग मलिकनयनाल ॥ अकपे हा पाया वीज कल अणि पंच
 सकल अमायिका किर्त थडा रथ सस मराच कंद म विधि थं थक यं निचास्यं गुम तुन हने नै १
 समाधि स्मृमाल पंचगव्य सिद्धनय विधि दसाल कथा उर्थं दूक दगां हा नं चाया क अग्नि देवता
 ल स्वस्य इकाया ज्ञान कर्म नित्यं नामा कर्म नया य माल ॥ विर्यं चा सकल शया द्ग्व १ या द्गु २ भावना
 पुजायाय कथनं देओ पुजा मराडल पुजा कर्माचार्य न मात्रि किं पुजाया के धने धुने क द न
 साहु ल देव क भोते चोया ल अग्नि देवता ल सोस्यं इकाया ध्ये पुसान पुया ज्ञान कर्म नित्यं नामा
 कर्म नयाय वलिविय चाक्र पुजा मराडल धिले लुति विपुजा दक्षणा गांधा निसला समयाचक्र
 कौला मधि नू धने दुसो पुहु या क्रिया जुलो ॥ ॥ अग्नि स्थापन या विधि ॥ हापां विधि थं थक

वा मुनु पु लि प उं गाली न तिय लु भं गु नि स्थाय २
 ये ॥ अर्लि इ नाय काय कल दोय ल सोया ह या गुरु या ख व सत य अग्नि ल सोस्य ह या गुरु या ज व सत
 ये भोत ल चोया ल अग्नि देवता जज्ञ सत य ॥ निचाय गुरु मराड वलि पंचगव्य सिद्धनय मराड थि
 ले स्नान नने लुति त्रिसमाधि कल शर्दि पुजा जज्ञ पुजा सिं पुजा धन सुबेला सलाचकं १ ल स्यनं सि
 ना द्वा अग्नि काया गुलि चाना व १ हं इ ना खलि वा का काया जज्ञ स मिच्या के अग्ना हुति देव पुजा दे
 वता हुति धुने व दु ल देव यात फल प्रासन कर्म नयाय ॥ वासि वलि विय पुं च धारा ल प था काली
 न अ प चा सत या हाय कोय के आहु विय ल १ स्यनं चाक्र पुजा मराडल धिले लुति सद्यं दाय चित पुजा
 दक्षणा गांधा निसला शोषा हुति वलि विसर्जन वलि दोय किला सज्ञ कथा पालं याय धुने क मुज
 कर्म उपाध्या खल स यात धोति र्हा हुता विष स क स्यां स्नान याय माल ॥ संध्या विच का ब सिला हु

निज्जलनथाकप्ये। विवहसाय ॥ निचाय गुरुमराडुलहने ॥ गुरुमराडुसमाधिह्रीं ॥ यापोपनिमाल
॥ पंचगव्यकाय मूलकर्मउपाध्यायिनी मुडापुजायानामुडीतियेसिद्धतय आदिपुजा पुनिपादपुजा मो
होनि साधन आदि काय मालसाय मराडुलधिले नदिनस्कार रागमाला विचसरोरुह मूलकर्मउपा
ध्यातस्तस्यानर्कियि आवेशमाल मराडुलविसर्जन समधि अनिल कलसपुजा अनुन्नर अग्निस्थाप
नर्त्त ॥ स्यनमाल त्रिनीलोयन सामकिपुजारत्नवर्ण कुम्भपुजा कुम्भनिभाजन धुप उल्लेखानर्क
आवेश स्त्री ॥ स्त्रीनृत्य नमः हं देवपुजादेवचा आहुति ज्वलितवज्रात्तर वलिपूर्व द्वारासित क
र्मनृत्य मात्रिकाकिरं पुजा औखवर्त्तमानपूर्वाचार्य यानर्कित थाकलियानर्कितिलयातमुडीतिय
के जोगिनीन्यास कोलाई सिनाहुति सर्वबुद्ध पूर्णाहुत्य सुनापातदुय महाकसालिलहिय मूलनया

हाशमरणा उपाध्यासुन्यनसालिलहिय कर्मनृत्यअवनिनिहित नहिय पूर्वाचार्यनृत्यत्रि
हन्तालहिये दक्षिणाचार्यनृत्य धुक्सालिलहिय गुजजमानथाकालि पश्चिमाचार्यनृत्य सा
लिसुन्य उन्नराचार्यनृत्य सालि भुन्य धजजमानपित्तयायगुया सेगुयानुसामेगुकेथु ॥ कौमा
रीपूजा मराडुलधिले पूर्णाहुत्य ग्ययवा सधंतय चिपूजाहसना वाधानिसना कौमारिपूजा दो
य देगुसत्य बाहिरदोय जजमान ^{वकीकु} समयाचक्र शेषाहुति सरव्याहुति सिमधतले विवहसला
मुनेचान संहार जयैर सिद्धपुरुजकक्षेया वलि दोय मूलयावलि दोय मुम्बाल गनचक्र
कलंकदोय ॥ ॥ नसनेवमूलयावलि दोय मेगुवलिस्थापनायाय अहोरात्रत्यचा पेकु
या सख्याहुतियांनुसीथथं विवहसाय थाकप्येह्रीं ॥ यागुरुमराडुल समाधिवलिमाल

सूर्या अर्घ्यं गुरुमराडल आदिसकर्ता अग्निस्थापनं पुहुया ध्यं क्रिया जुल यालनयाय मफु साज
 कथा धिंतया पुजायाय गुरु देवयात अन्न प्रासन कर्म तथाय मेगु व्या कं उर्थं समया चक्र भो
 नयाया ॥ २ ॥ रात्रिया शिला हुति ज्वलनं थाकपे पुजायाय गुरु सकर्ता उर्थं किरं च चाजक म्बाल
 ॥ ३ ॥ स्वहुया दिनसं उर्थं हु देवयात वृता देशतयाय माल ॥ रात्रिया उर्थं किरं च चा
 माल ॥ ४ ॥ पूर्णा पुहुया अभ्यं नरया जुसा शिला हुति ज्वलनं थाकपे ह ॥ स्था उर्थं दिनसं
 जुलो लिचाय गुरुमराडल पंच गव्य द्याय मुडी नित्ये मु च्चाल यात्र पुजा सालि पुजा सिद्ध तये
 देव पुनि पाद पुजा महानि साधन आदिकाय तालू काय नं दिन मस्कार राग मात्ता विश्व सरोरुह
 समाधि अनिल कलस पुजा अनुन्नर हो म च चा त्रि निलोपन देव पुजा देव च चा मराडल पुजा

स्थिति माल २६
 मात्रिका किरं जु ब्रह्म ही कर्माचार्य पुजायाय गुरु देवता हुति धते धुन का वहु देवयात दस कर्म
 पुनि स्था सफुलित्वया वयाय ओह हा कोल स्वां द्याय सासि वलि विष्णु तपा १३ सवलि विय आहुति
 विय योगिनि न्यास कोला वै स्वान ल दुय पुर्णा जु दुये सुला पात दुये सालिल हिय मूल नृत्य हाडा
 भरणा मेगु जु कज जमान् पिं धं मेगु या कं थ मेगु दु कोमारि पुजा मंडल धिले गवय ग्वाल दुये सूला
 यात स नूल ति ४ तथा पूर्णा दुये विं बह मुये जजर सा काय सदी तय चित पुजा दश रागा बाधी निसला
 गुरु यात जथा श्र धा नू ओह वस्त्र विय दिगु समय द्याय कोमारि पुजा दोय दिगु समय काय बाहिर
 समया बक्र सेवा हुति बलि विसर्जन संहार मराडल त्रि वं चा स कल सादिं धोये भेवत वलि सासि वलि
 द्योये त्रि पंचास कल शाल बहाय रज काया सक स्यातं शेल स भति २ तये वाकि वीज कल श सैत सार ज

चुय कल द्योय मफतसा कहे पुहु वसा धन जज्ञया ना चतुर्थि रव रज चुय कल वने मुन कर्म बार उपाध्या
दिगा चार पि स क ले वने नाल पुसि सवना नवना ग सा नार ज चुय के ली धनु या ह्या पि ताल पुसै ल सो
या कया चिकि धं गु मरा तु ले तया पंचो पचार पुजा या य मानय ॥ ध पुहु सय को मारि विज्या च के या त था क पे
विधि थं जु ल ॥ मुन कर्म उपा ध्या स्व स्या गु रु मरा तु ल माल मुन पंच गव्य द्वा य काय पद सा धना या
गु मरा तु ल स पंच गव्य हा या क सिद्ध थाय मरा तु ल चो या ॥ उक्तं च त्रिकां विदलं पप्रंत दाह्य वेद पत्र कं
षट्को रां बर्तु लं चैव चतुर्षष्टि दलानि तं वज्रा वली त था ज्वा ला लि ये च विधि ना मु धः अति गुह्य त म त्रे
रा वज्र सत्त्व व बो य था ॥ ध चो या मरा तु ल पुजा या य पंच सालि पुजा षट् चक्र पुजा मरा तु ल दी दिग्बलि न
स वलि दि ये सिद्ध त ये देव प्रति पाद पुजा मह नि सा धन पंचो पचार पुजा आदि का य महु मरा तु ल धि

ले सुति वज्र वारा ही दे गु नि या ये वलि सद्य म त था पि पुजा देव पुजा चक्र न न्या पुजा धुति धुने व ली
१ स्पे न ता य द्वा फो ल खान ज्व ना व ति सा शर म वं जा य या ना कौ मारि का य क ल द्यो य देवी विज्या य व
न सो या ह्य व स ना या हा या क चक्र स विज्या च के स क त्पा तं अर्घ या के धु ने व द्वा सि नि स्प विधि पूर्व
न पु जा या य धु न का व आ दि का म सह भो ज न स पंच सालि ल हि ये ध लि आ दि धु न का व क ली षट् को
य मरा तु ल धु ने सु ति सद्य त य चित पुजा द क्ष रा ना भु जा य य देवी लि हा वि ज्या च के कौ ना म धि
भू लो को त्रे जो भो ज पृ थ म भा ग च न्द्रो गु त्म सा न अर्थ भा ग क ली ष भा ग त या भो ज न धु मी गा
रि स्मे त द्यो य शो ष व लि सु र व मु द्दि पा म क सि ध या स्मे त माल जु ल ॥ ॥ ध नी ले पी ठ ली ते या त
क ल ज्व ल पु जा वि या वि स ली पि ठ स म हा च क र त य क र द्यो य ॥ ॥ ध नी लि य धि लि ते या त क ल स पु जा ज्व
ल पु जा या ना य चि दे व लि त य क ल द्यो य क ल ली द्यो य ॥ ॥ ध नी लि आ षा ल लि ते या त कु म्भ पु जा जा र

विधिआषाढलितेगुलिथ्यंजुल॥ ॥थनलि विहावियगुदेखायाथ्यंजुल॥ ॥थनलि
 गुहसमगुदेखायाथ्यंजुल॥ ॥थनलिवनजात्रावनसंजिउं योजिनीयाथासंजिउंयुजा
 यायगुथधाथ्यंजुल॥ ॥थनलिभस्मप्रवाह।इक्षिदुबलेसंजिउंपुलातनिमतमगा
 रभाहुति।चवापेकुअहोरात्रयाथ्यंपुलादयवभस्मप्रवाहयायविधिथसफुलिचोथ्यं
 जुलो॥ ॥इतिअहोरात्रचतुर्थजज्ञविधिकंथजुल॥ ॥सम्बत्२२५मिमाघ
 कृष्ण३पदसाधन७अग्निथापन७१पूरणायानादिनयनवाहलयातोवाकारविकि
 धननसेगुसअहोरात्रचतुर्थजज्ञयातोवेसमूलगुरुपलिसासर्षवाहलयावज्रा
 चार्य्यचतुरात्रकमोचार्य्यनभवाहलयावज्राचार्य्यदेवदुर्गपुष्पाध्यामर्षवाहलयावज्राविलास
 पुर्व्वचार्य्यकावाहलयात्रीरत्नइक्षिणाचारकावाहलयाज्ञानविरंतिपश्चिमधाकावाह

नयाकवितानन्दउत्तरमर्षवाहलयाकुलमानथनेजुयावधचोयातयागुविधिनज्यासि
 धयकाजुल॥ ॥सेगुदेवयाजुसांमेगुर्कथजुल॥ ॥गुंवाहादेवयाजुसांमेगुर्कथजुल
 अथवाभाहायानयामतजुसीमेगुर्कथजुलभुम्ह॥ ॥

३२ (नडागंभानियाट९

३३ (मेहनभानिसयाट९

३४ (दामावाभानिसयाट९

३५ (यिर्वगुयाट९ आदधनयाट९

३६ (जिधियुनीवायाट९

३७ (जामावायाट९ नागजनयाट९

३८ (रुनयिसयाट९ आवाहनयाट९

३९ (वैदधनयाट९ शायजनसियाट९

४० (गुवाहनसयाट९

४१ (नमावृद्धाययाट९ स्वागतवैद्ययाट९

४२ (धमदसयाट९ वाकायाट९

४३ (वैधनियाट९ गमनसयाट९

४४ (वैद्ययाट९ सइसनकाययाट९

४५ (कालिसयाट९ काथुपियियाट९

४६ (तीमृतिथसयाट९ तीतिगनयाट९

४७ (स्वानवयनियाट९ गुहागन्धियाट९

४८ (शीविद्याधनयाट९

४९ (पनतिपुद्गसयाट९ वागमतियाट९

५० (गकलुसयाट९ तीखमानसयाट९

५१ (त्येपुद्गयाट९ ददवायाट९

५२ (नानागनयाट९

५३ (लीमृतिथसयाट९ लूतिहासयाट९

५४ (किमकासयाट९

५५ (पातानयुनिसखडागयाट९

५६ (माहनसखडागयाट९

५७ (कुनरतिनर्दकासयाट९

५८ (कोथवगुसयाट९

५९ (थथुगुकागुसखडागयाट९

६० (लोकेधनसयाट९

६१ (वैद्यगनाउसयाट९

६२ (कालिदरुसयाट९

६३ (वलिगनसखडागयाट९ कनखसयाट९

६४ (मरुणीपचनसखडाग९

६५ (वावासखडायाट९

६६ (शवलिसनयाट९ खडाग९

६७ (कंवानसखडागयाट९

जायुलिकृशा ॥ नागय यगय ॥
 क्षमश ॥
 सिनरिशा ॥
 वृक्षिशा ॥
 वृक्षिशा ॥
 व्यानयन ॥
 वनगगसि
 वीनायसि
 वूनसि
 इवनसि
 अवनसि
 कायूराम
 कृष्ण
 वानानसि
 याक्षन
 नागकशन
 यवनतेश ॥
 यवनगध
 यवानुग
 कृष्णमचून
 श्रीयगु
 ववनव
 वृषाडादायन
 वननकन

एथनीलसाददायक
 कर्लेगदुजा
 वीगुदुनर
 निमिवायानर
 अद्वानया
 सादुदायक
 एथनीसादायक

एकासिक्तथ
 वामयजाइ
 अद्वानयात
 यवानुग यवनगध
 सिनरिशा वृक्षिशा
 वानयन दवननसि
 वकृणास वपसि
 नसाभसि
 वयनसि उवनसि
 अष्टासि दवननसि
 यवाससि उवन
 नासा कसान

१ व्याकृष्णवर्तिलिपिगधनधन २२
 २ व्याकृष्णपाट १ गठपात १ २३
 ३ खानूपाट १ नवनिगपाट १ २४
 ४ साइनपाट १ सम्यगपाट १ २५
 ५ वनूपाट १ लोहापाट १ २६
 ६ अंशुलिपाट १८ ब्रदक
 ७ गनइसपाट १
 ८ आसिपाट १ तादनपाट १ २७
 ९ कगिसपाट १ निनितासपाट १ २८
 १० शानूपाट १ जालंधलसपाट १ २९
 ११ वानिश्वासपाट १ जोदक ८
 १२ वीडनवसपाट १ यासिकसपाट १ ३०
 १३ कमलानिधसपाट १
 १४ नैमाधिसपाट १ ॥ हिवपाट १ ३१
 १५ पंथिपाट १
 १६ थंकापाट १ कगक दवगिनय
 १७ ककृष्णसपाट १
 १८ लोतिसपाट १ ब्रदक
 १९ येनयिनायसपाट १ यादक
 २० वृगसपाट १ आनि
 २१ सुनसिमहाकान
 २२ नगिददसपाट १

(धनद्विष्टि) १, अइवानपाग ३
 (अजमय) १, २० धृतिपू १, २० र्वचगन्ध
 (विमात्राहा) १, २० लिमीवापाग १, ३
 (र्वचधायक) १
 (दकषादडाकृदर्य) १, वलियागदं १
 (वोलेवडायागदं १, गुनुरागठरु
 यथहाकि, दकषा, करुयाग
 (गम्वनधनिपाव ५)
 (अिगुनि, ललिक, वन, गुर्लरा
 (मंरीरा, कृया, पाल, कनदि
 (स्रगधम, र्वधाय
 (र्वचगन्ध, र्ववासर, अरध्वग २५
 (गुकनपाग ६
 (अनचग २५
 (धर्तवलिसकाययात
 (धर्तचाकूडानिमकुनयातर १॥
 (यान्कडागानिकयूजायागदयकविधि
 (यूजाग १, जायूजाश १
 (राडागयाग १५
 (खालयाट ७
 (रुसखायूनजाकह ३ मायूअ
 (अजायागकु ५
 (वलिचिकि ५, ६

(धनति, वृथीविजाचना ॥ तमाकस्वान
 (कनगयूजा, र्वचतेश १ वलियाग ४
 (वृनरु, अर्ध
 (वय, वन,
 (धृतिवृथिजाचना
 कामाअग्निजुरु
 धर्तकासिक्कुरु
 दूजा ॥

(एकासिक्कुरुदूजा
 (हामश १, सिनुठि १
 (रुहिश १, दानव १
 (दुष्कुश १
 (अइवानपाग ४
 (र्वचामृग
 (र्वचगन्ध,
 (हामति
 (दवदानुति
 (र्ववसिने
 (वक्रनसि
 (र्वयसि
 (नसाप्रसि
 (वयनसि
 (वृनसि
 (अर्धसि
 (रुनरुदुम
 (यनाससि
 (रुशान

(धनलिजवालोयन ॥
 (हामश १, सिनुठि १
 (रुहिश १, मृष्टुश १
 (हामसि
 (वृनसि, र्वयसि,
 (इवनसि, भनकानसि
 (निनाधृति, लिर्क ० किन्
 (दोकठकिनि, दानव १
 (अइवानपाग ५
 (र्वहन, निमिवायाग २
 (सायागर्ध ० यन २
 (मृयाशीनसावाय
 (०००० नकनन इवहायक
 (कुशान, मादडाअनिजक
 धर्तिजवानांयन ॥

[illegible]

ये कानां मे वक्राणां प्रवृत्तिः॥

मनीषिभूषणदा॥

卷一百一十五



१ धननिष्ठा धर्मः ॥ इधनमि

(१) धननिष्ठा धर्मः

(२) धननिष्ठा धर्मः

(३) धननिष्ठा धर्मः

(४) धननिष्ठा धर्मः

(५) धननिष्ठा धर्मः

(६) धननिष्ठा धर्मः

(७) धननिष्ठा धर्मः

(८) धननिष्ठा धर्मः

(९) धननिष्ठा धर्मः

(१०) धननिष्ठा धर्मः

(११) धननिष्ठा धर्मः

(१२) धननिष्ठा धर्मः

(१३) धननिष्ठा धर्मः

(१४) धननिष्ठा धर्मः

(१५) धननिष्ठा धर्मः

(१६) धननिष्ठा धर्मः

(१७) धननिष्ठा धर्मः

(१८) धननिष्ठा धर्मः

(१९) धननिष्ठा धर्मः

(२०) धननिष्ठा धर्मः

(२१) धननिष्ठा धर्मः

(२२) धननिष्ठा धर्मः

(२३) धननिष्ठा धर्मः

(२४) धननिष्ठा धर्मः

कलिनमि

कोषमो अइवानपात

इहाक रं वगवनिपा

हाक वसग

कनं नमान

सयनमान

वज्रं ० मान

मुद्रनाननवलि विथ

मैदावसगनतियाव

कृजायाय हाकवान

वापासंगथावकायीव

कथ गन्धनयादि

यानयीतवास

मार्गनीयामी अनिक

पुदीयसंकाय

मन्ववलिपिथीस

धनसमयवक

सतिक्कनुसियाय

थकागि त्वका सुत्र

उजमान

सनातमान

धमि काधमनिजह

(१) धननिष्ठा धर्मः

(२) धननिष्ठा धर्मः

(३) धननिष्ठा धर्मः

(४) धननिष्ठा धर्मः

(५) धननिष्ठा धर्मः

(६) धननिष्ठा धर्मः

(७) धननिष्ठा धर्मः

(८) धननिष्ठा धर्मः

(९) धननिष्ठा धर्मः

(१०) धननिष्ठा धर्मः

(११) धननिष्ठा धर्मः

(१२) धननिष्ठा धर्मः

(१३) धननिष्ठा धर्मः

(१४) धननिष्ठा धर्मः

(१५) धननिष्ठा धर्मः

(१६) धननिष्ठा धर्मः

(१७) धननिष्ठा धर्मः

(१८) धननिष्ठा धर्मः

(१९) धननिष्ठा धर्मः

(२०) धननिष्ठा धर्मः

(२१) धननिष्ठा धर्मः

(२२) धननिष्ठा धर्मः

(२३) धननिष्ठा धर्मः

(२४) धननिष्ठा धर्मः

१ धननिष्ठा धर्मः ॥ इधनमि

(१) धननिष्ठा धर्मः

(२) धननिष्ठा धर्मः

(३) धननिष्ठा धर्मः

(४) धननिष्ठा धर्मः

(५) धननिष्ठा धर्मः

(६) धननिष्ठा धर्मः

(७) धननिष्ठा धर्मः

(८) धननिष्ठा धर्मः

(९) धननिष्ठा धर्मः

(१०) धननिष्ठा धर्मः

(११) धननिष्ठा धर्मः

(१२) धननिष्ठा धर्मः

(१३) धननिष्ठा धर्मः

(१४) धननिष्ठा धर्मः

(१५) धननिष्ठा धर्मः

(१६) धननिष्ठा धर्मः

(१७) धननिष्ठा धर्मः

(१८) धननिष्ठा धर्मः

(१९) धननिष्ठा धर्मः

(२०) धननिष्ठा धर्मः

(२१) धननिष्ठा धर्मः

(२२) धननिष्ठा धर्मः

(२३) धननिष्ठा धर्मः

(२४) धननिष्ठा धर्मः

सिन्धि

वृद्धि

व्यानयन

अइवानपात

आसनवदिक

वक्रुश

नियदन

कसविर्क

यवगल्येवानुग

यन येवले

कमानिधुका

माइइयाग

मायधिक

अइअइवानया

कनयताका

वलिरेवतयाग

पुष्पकवनमन

जागध

पुष्पकवनमन

मानुगाअनिदाम

सप्ततसमशीतमा

सात्तिकयाय

धमकामानिधुका

(अक्षानागच्छियाकीवलकुङ्कुयागकयक
 (कृजाशजायुजाश)
 (यवसुगकाग्वन)
 (कामानिसुगका,
 (अइवानपाग)
 (कीनलसुग)
 (वाकनसग्वन)
 (सिभनिसुगव)
 (मनयाग्वन)
 (आकासमानगुज)
 (नृविगश)
 (दिसिगश)
 (यवनलश)
 (लीलकुलुति
 (शीखगु, कृकम
 (कयून
 (शीखगुवीग
 (नकयवुनवीग
 (दिगयुका
 (धनकसि
 (सामन, यनि
 (इइसायापाग)
 (कवमीनाशट
 (वयग्वन)
 (मइमानक)
 (आदिअक,
 (कथसयाग
 (पववदि

यत्रेअप्रधि।
 (आगमसुनसा
 (सुय्यीय, गुनमलुत, यंव
 (धनकाव, चादन
 (यनवायावग,
 (मडागानना,
 (मडानगियधनका
 (सिधुग,
 (आदिसमय,
 (मलुनधिन,
 (गनकाय,
 (नद्धिनमस्त्वान
 (आदिनकधन
 (कजघेउमगव,
 (उमनूखधग
 (आगमकनसागन
 (वृतिआमूडानमगि
 (यगव ॥ २०३ ॥

(२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥
 (२०३ ॥ २०३ ॥

(शीउकजसत्वायनमकुग)
 (वहीनविदानदयकविभन)
 (जायांउनुगिअयनिका)
 (अजमानयाक)
 (युनूअधना,
 (युनूसीयवधंवाग्वय
 (मनूयुन, कर्मोयान
 (उपायादा, धागिस्थग्वय,
 (निर्वेकसायावशग,
 (युअधमतायातदयक,
 (कनंशयुजादानन,
 (उसयुजा, आजमानन
 (मंलुतधिनक, त्वानवायक
 (होआययवादान,
 (कीयागयदसत्वाव
 (वादान, वहीन, कुंशवसी,
 (दयनमग्वन, धुगिदयक
 (उदयायुगनइयमान
 (धुगिधनदानकिवनतनक
 (सयनग, कनसासिधक,
 (दक्षम, विसर्जन
 (धुगिउशानया॥

कोसि
नेचार्सि

वमसि ६
द्वमसि १
समीनसि ८
द्वमसि २
द्वमसि १०
दीवावसि ११
वृक्षतनूतसि १२
पुष्पयसि १३
वेककसि १४
अवसि १५
कदमसि १६
ग्रीवावसि १७
द्वमसि १८
नाहासि १९
वृक्षसि २०
सनि ०२१

द्वमसि २४
द्वमसि २५
कदान १०
समसवीज
गतयुथ
युथीयु २
नयक १०
ययक १०

वृक्षतनूत साधनक १
शीखलुयुनि २०
नकवदनयुनि २०
युनि २०
सर्वगन्ध १०८ शीखलु
कस्तुरि, कस्तुरि, अयुनि
शीन, वान, गन्धवस
तालिक्कान २०
यानयन ६
जहुआमविश ५
सर्वआमविश ५

वृक्षदयक २०
खानावा २०
दामक २०
मातक २०
शुक्र २०
कययुनि २०
युको २०

द्विधाधनि २०
द्विधाधनि २०
द्विधाधनि २०
युनि १०८
युनि १०८
युनि १०८
युनि १०८

६८ त्वनसकि
६९ न, त्वान
७० यवयकवान
७१ ममनसि
७२ नागयतयु २
७३ गनवान, वलिक्कय
७४ गिद्वी, कप, जीक
७५ यविवान, खाइ, नल
७६ यतवान, वधान
७७ यनदन, खनध
७८ वनगदन, युयुन
७९ जगानपत, युयुन
८० यीनायदन, कचने
८१ यनसियतमानक
८२ यनयमानक
८३ यामा २
८४ जहुमलुमसिमानक

८५ नागक, यतिक्क
८६ कोनलक
८७ कनसक
८८ यवयगायमानक
८९ यानमानक
९० यानाखान २
९१ कोमागय १३
९२ यनिनयान ३ युयुन
९३ सिधुनयानमानक

नायपगायय ४
६६ २ नाताजनि १
६७ २ नाता १
६८ २ नाता १
६९ २ नाता १
७० २ नाता १

७१ २ नाता १
७२ २ नाता १
७३ २ नाता १
७४ २ नाता १
७५ २ नाता १
७६ २ नाता १
७७ २ नाता १
७८ २ नाता १
७९ २ नाता १
८० २ नाता १

८१ २ नाता १
८२ २ नाता १
८३ २ नाता १
८४ २ नाता १
८५ २ नाता १
८६ २ नाता १
८७ २ नाता १
८८ २ नाता १
८९ २ नाता १
९० २ नाता १

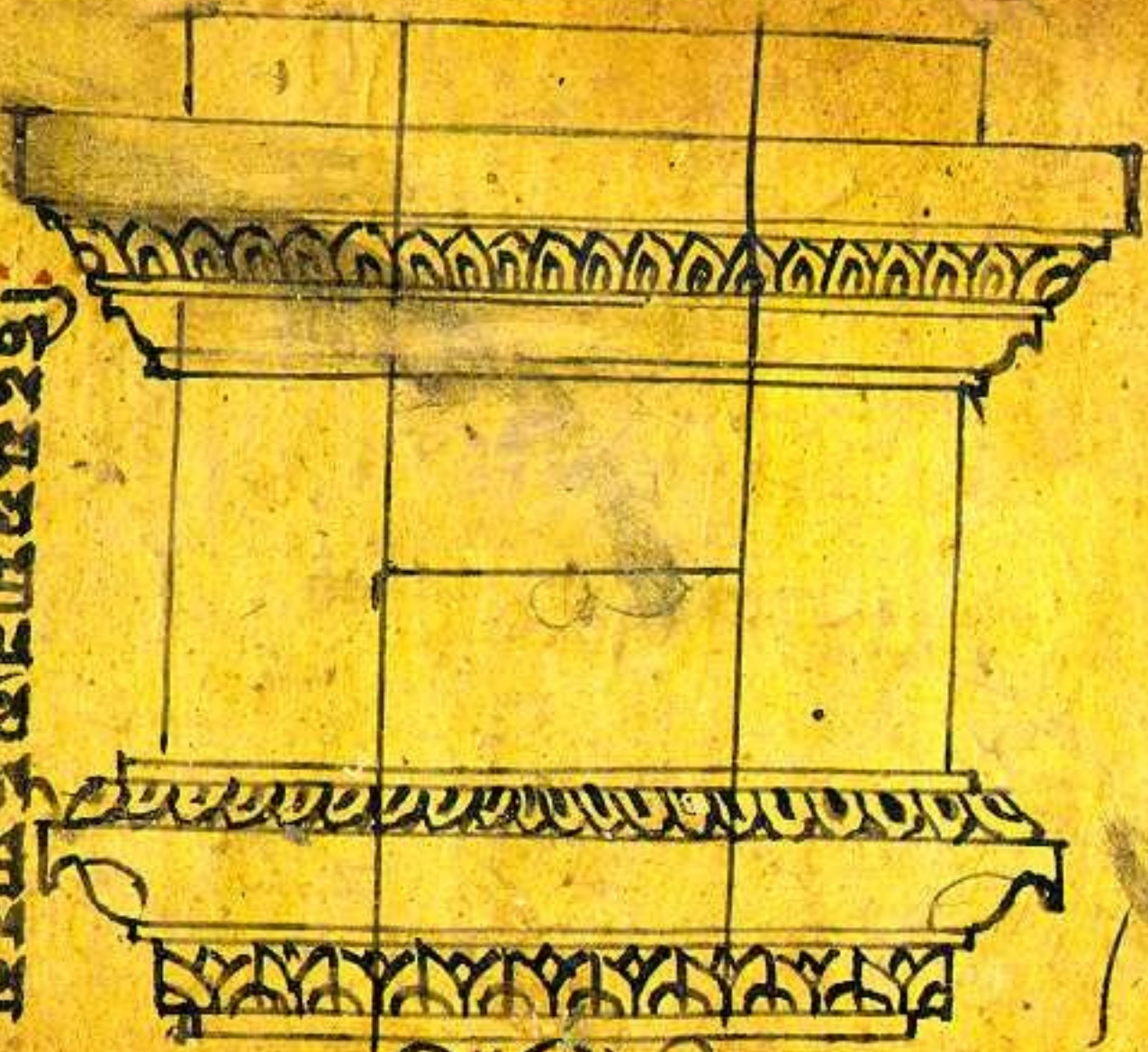
五

अथर्व

अथर्व

अथर्व

अथर्व



विदमस्तुमानम्बुदयादम्
विदमस्तुम्बुदयादम्॥

३३३३

[illegible]

५५ ५	५५ ५५	५५५ ५५५
५५५	५५५ ५५५	५५५
५५५ ५	५५५ ५५५	५५५ ५५५ ५५५



सिवावह्मयानर्कः ऊँ व न र्द व न्न व न र्ग रा ह उ व न
ना ग न व न र्ग य क (क) प व न र्ग म ल का न ना व न
दि ना य क ॥ म तु वे वि द द गा स्वा मि ना मि त्र
दि न रु चै प्र नि रु न य ॥

अमलायात्रक्रीन

॥ ५५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ५५ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वासुदेवाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

卷之五

नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible][illegible]

मालि विप्रमुपराधं कृतं दूडाङ्गनदिवलिप्रवधनासक्ति

कनया अतिक्रान्ति

[illegible]

महायानजुष्टासिनाहुतिर्कठयायडु

[illegible]